बिरहोर जनजाति की सामाजिक व्यवस्था का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन : झारखण्ड राज्य के संदर्भ में

पीएच.डी.उपाधि हेतु

प्रस्तुत

शोध-प्रस्तावना का सार

इतिहास विभाग

समाजिक विज्ञान संकाय

बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल विश्वविद्यालय, धनबाद।

शोध–निदेशक **शोधार्थी**

डॉ0 उमेश कुमार
सहायक प्राध्यापक
स्नातकोत्तर इतिहास विभाग
बिनोद बिहारी महतो कोयलांचल
विश्वविद्यालय, धनबाद

अलबिना कच्छप

बिरहोर जनजाति की सामाजिक व्यवस्था का एक विश्लेषणात्मक अध्ययनःझारखण्ड राज्य के सन्दर्भ में

भूमिका

झारखण्ड में मुख्यतः दो स्तरीय संस्कृति है – जनजातीय और गैर जनजातीय या सदानी–लम्बे अर्से से साथ–साथ रहने से दोनों के बीच समरसता बनी रही है, फिर भी एक अंतर तो है, बाहरी लोगों का झारखण्ड से सम्पर्क पुराना है। जैन, बौद्ध और बाद में शैव एवं वैष्णव का अभ्युदय हुआ, इस्लाम आया बाद में ईसायत भी यहाँ आई। उड़िया, बंगाली, पंजाबी आदि भी आते बसते रहे है इस प्रकार झारखण्ड विभिन्न समाजों, धर्मों एवं संस्कृतियों की संगम भूमि है।

(प्रमाणिक, 2019,7) भारत के जिन राज्यों में जनजातियों की संख्या अधिक है उनमे झारखण्ड प्रदेश का स्थान प्रमुख है। झारखण्ड का नाम सुनते ही एक ऐसे प्रदेश की याद मन में उभर आती है जो कि प्राकृतिक संसाधनों के लिए भारत देश के सबसे समृद्ध राज्यों में से एक है। 15 नवम्बर 2000 को देश का 28वाँ राज्य के रूप में यह राज्य भारत के मानचित्र पर उभरा था तब यहाँ के लोगो के मन में यह उम्मीद जागी थी कि यह राज्य देश के सबसे समृद्ध राज्यों में से एक होगा लेकिन अफसोस आजतक ऐसा नही हो पाया। यहाँ की आदिम जनजाति आज रोटी के लिए तरस रही है। झारखण्ड में 32 जनजातियाँ पाई जाती है जिनमें से 8 जनजातियों को आदिम जनजाति की श्रेणी में रखा गया है। इन्हीं 8 आदिम जनजाति में से एक जनजाति है बिरहोर जो कि अपने समुदाय को विलुप्तता से बचाने के लिए संधर्ष कर रही है। यह जनजाति तीन भागो में विभाजित है जांघी बिरहोर, उथलू बिरहोर तथा बसलू विरहोर ये समुदाय झारखण्ड प्रदेश के अलग–अलग जिले जैसे हजारीबाग, राँची, चतरा, गिरीडीह, पलामू तथा सिंहभूम के कुछ भागों में निवास करती है।[1] बिरहोर जनजाति पहाड़ो, नदी नालो और जंगलो में जंगली जानवरों के साथ वर्षों से साथ–साथ चलते आ रहें हैं। सामाजिक आर्थिक विकास के लिए ये प्रयत्न करना नहीं चाहते है। इसी कारण से सालों बाद भी इनमें कोई खास उन्नति और बदलाव नहीं देखा जा सकता है।

(चक्रवर्ती, 2017, 249) भारत देश में विशेष पिछड़ी जनजाति लगभग 75 हैं। बिरहोर जनजाति उन्ही में से एक जनजाति है। 2001 की जनगणना के अनुसार बिरहोर जनजाति की संख्या 10,000 है।[2]

(मन्ना, सरकार और धोष, 2013, 2) मुण्डारी शब्द बीर और होर 'बीर' का अर्थ है जंगल और 'होर' का अर्थ मनुष्य। जंगल का मनुष्य ये मुण्डारी परिवार से सम्बन्ध रखते हैं ये लोग

अलग–अलग तरह के वृक्षों और जानवरों पर अलौकिक विश्वास रखते हैं। बिरहोर धर्म, दैत्यवाद, पूजा और विश्वास का मिश्रण प्रस्तुत करता है। ये भूत–पिचाशों में आस्था रखते है और इनके दिन प्रतिदिन के जीवन में अलग–अलग तरह के आत्माओं का बहुत प्रभाव है।[3]

(ठाकुर और शर्मा, 2012, 17) झारखण्ड मे बिरहोर जनजाति की संख्या 2038 है और ये 1991 की जनगणना के अनुसार हैं। ये पलामू, सिंगभूम, गढवा, लोहरदग्गा, गिरीडीह, राँची, गुमला, हजारीबाग में मुख्यतः पाए जाते हैं। इनमें से 15% ही शिक्षित है। परंपरागत रूप से ये भोजन एकत्र करने और शिकार करने वाले समुदाय हैं और ये ही इनकी आय का प्रमुख साधन है। इनकी आर्थिक गतिविधियां हालाँकि एक निश्चित रणनीति के तहत संचालित होती है। जंगल की कटाई इनकी पांरपरिक अर्थ व्यवस्था को प्रभावित किया है और इनकी अस्थिरता का कारण है।[4]

(डाल्टन, 1875, 158) बिरहोर जनजाति जंगलो में रहते है वन्य उत्पादों, मधु, जंगली पशुओं का मांस आदि के विनिमय से प्राप्त खाद्य वस्तुओं को खा कर अपना जीवन व्यतित करते है, छोटे–छोटे पशुओं जैसे खरगोश, बन्दर को पकड़ते है और उनका मांस खाते है या जिन्दा बाजार में बेच देते हैं। ये लोग बहंगी, रस्सी, सिका, चोप, शहद, मोम और कन्दमूल, फल आदि जुटाने में अपना सारा समय बिता देते हैं। महिलाएँ प्रायः रस्सी और उत्पादों को बेचने बाजार जाया करती हैं।[5]

छोटानागपुर के नागवंशी समुदाय से अलग होकर बिरहोर कोडरमा, धनबाद, हजारीबाग, बोकारो, गिरिडीह और भी दूसरे जिलो में फैले है । इनकी आबादी 10 हजार 726 है यह आबादी 2011 की जनगणना के अनुसार है। इनकी संख्या दिन–प्रतिदिन घटती ही जा रही है। 2018 तक बिरहोर की आबादी में सिर्फ 22 फीसदी की ही बढ़त हुई है। बिरहोर जनजाति की जनसंख्या में वृद्धि नही होने का कारण जंगलों का कटना शराब पीने की लत और कुपोषण है। इनमे काला–जादू अन्धविश्वास और झाड़–फूक पर ज्यादा विश्वास होने के कारण ये डॉक्टर के पास जाना नहीं चाहते हैं। इनकी मृत्यु दर अधिक होने का यह भी एक कारण है। इनका विकसित राजनैतिक संगठन नही है। आधुनिक राजनीति लोकतंत्र इनके लिए कोई मायने नहीं रखती है। यह अशिक्षित, अंधविश्वासी और सुविधा विहीन समाज है।

सरकार द्वारा इनको स्थापित करने का प्रयास जारी है इनके रहने के लिए मकान की व्यवस्था की गई है, लेकिन ये एकांत परिवेश को छोड कर जाना नहीं चाहते हैं। हजारीबाग, रामगढ़, लोहरदग्गा, धनबाद आदि जिलों में इन्हें जीवन यापन के लिए वैकल्पिक साधन और आवासीय सुविधा प्रदान कर इनके जीवन–दशा को बदलने के लिए प्रयत्न किया जा रहा है। इनके

स्वनियोजन के लिए बकरी पालन, जूट–वस्तुकला, रस्सी निमार्ण आदि की योजनाएँ चलाई जा रही हैं इनके रहने के लिए जो इंदिरा आवास बनाई गई है वे बरसात में चूते है, और मलबे में तबदील हो गये हैं। इन घरों में ये तकलीफ देह जीवन बीताना नहीं चाहते हैं और उब कर जंगल की ओर चले जाते है। इनका जीवन जंगलों पर निर्भर है और जंगलो की कटाई तेजी से हो रही है। इनके अस्तिव की रक्षा के लिए अबतक के किए गए सभी प्रयास विफल हो गए हैं। इनके अस्तित्व में खतरा मंडरा रहा है। इनकी जनसंख्या कम हो रही है। संघातक बीमारियां, कुपोषण, अहार के अभाव के कारण मृत्यु दर बढ़ रही है प्रजनन क्षमता घटती जा रही है।

(प्रेमी और कुमार, 2018, 1) बिरहोर जनजाति आधारभूत सुविधाओं से रहित है जैसे भोजन कपड़ा, घर, शिक्षा स्वस्थ्य ऊर्जा संचार सेवा परिवहन सुविधाएँ आदि। ये उत्थान की दीप्ति से कोषो दूर हैं। रोजगार के मामले में दूसरे समाज से पिछडे हैं।[6] अतः इनकी प्रकृति और पसंद के अनुकूल ही वातावरण मे रख कर इन्हें आधुनिक सभ्यता के सम्पर्क में लाने का प्रयास किया जाय।

शोध समस्या

- बिरहोर जनजाति की सामाजिक अवस्था अत्यन्त ही दयनीय है। गरीबी कुपोषण, स्वास्थ एवं पोषण के अभाव, आवास, पहनावा, जटिल अन्धविश्वास खान–पान आदि विकट समस्या है।

- बिरहोर की स्थिति को देखकर समझ में आता है कि वो जंगलो को छोड़ना नहीं चाहते है और जंगलो से प्राप्त हेने वाले कच्चे माल तथा उससे बनाये गए उत्पादों के द्वारा ही अपनी जीविका चलाना चाहते हैं। जंगल तेजी से काटे जा रहे है इस वजह से भी इनकी आर्थिक अवस्था दिन प्रतिदिन निम्न होती जा रही है।

- बिरहोर जनजाति के लिए सरकार द्वारा की गई पुर्नवास की व्यवस्था असफल हो रही है। इनके लिए आवासीय कालोनी बने हैं लेकिन ये अपने शांत एकान्त परिवेश को छोड़कर जाना नहीं चाहते हैं।

- बिरहोर जनजाति में शैक्षिक जागरूकता कम दिखाई देती है। प्राथमिक स्तर तक तो कुछ सफलता मिली है, किन्तु साक्षरता दर में अल्पज्ञात व शालात्याग की स्थिति इनकी अनभिज्ञता, अंधविश्वास, सामाजिक कुरीतियाँ विद्यालय जाने वाले बालक–बालिकाओं के माता पिता के अरूचिपूर्ण व्यवहार है।

- बिरहोर जनजाति में अंधविश्वास जादू–टोना, झाड़–फूक पर ज्यादा विश्वास होने के कारण ये डाक्टर के पास जाने से डरते हैं।

- बिरहोर जनजाति में अहार का अभाव, कुपोषण व संधात्क बीमारियों के कारण मृत्यु दर बढ़ रही है।

साहित्य–अवलोकन

सत्त मानव प्रयासो से "भूतकाल में एकत्रित ज्ञान का लाभ शोध में मिलता है। शोधकर्त्ता द्वारा प्रस्तावित अध्याय से प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संबंधित समस्याओं पर पहले किये कार्य से बिना जोडे स्वतंत्र रूप से अनुसंधान कार्य नही हो सकता है।

(राय, 1925, 131) ने लिखा हैं कि बिरहोरों की बोली संथाली के बजाय मुण्डारी के अधिक नजदीक है। कुछ मुंडा उन्हें जंगली मुंडा कहते हैं या बीर मुंडा पुकारते हैं। लेकिन कुछ बिरहोर मुंडा से ज्यादा संथाल के निकट–संबंधी समझते है। मुंडारी के होड़ो (होरों) का संथाली स्वरूप बिरहोर है।[7]

(मजूमदार, 1958, 365) भारत की जनजातियों को भौगोलिक आधार पर तीन श्रेणियों में विभक्त किया है – उत्तर पूर्वी और उत्तरी क्षेत्र, मध्य क्षेत्र, दक्षिणी क्षेत्र,।[8]

(बर्मन, 1972, 5) भारत के अलग–अलग क्षेत्रों में रहने वाले जनजातीय सम्प्रदाय को सामाजिक, सास्कृतिक, ऐतिहासिक, नृजातीय सम्बन्धों के आधार पर 5 क्षेत्रीय समूहों में बांटा हैं।[9]

(शर्मा, 2006, 96) बिरहोर घाँस–फूँस पत्तों की छप्पर और लकड़ियों के पट्टो की दिवारों से बनी झोपड़ी में सर्दी, गर्मी, बरसात बिता देते हैं।[10]

(प्रमाणिक, 2018, 44) बिरहोर जनजाति के लोगों को जड़ी–बूटीयों के बारे में बहुत अधिक जानकारी है, बड़े से बड़े बीमारी को ये लोग सबसे पहले जंगल की जड़ी–बूटी द्वारा ही दूर करने का प्रयत्न करते हैं।[11]

(मैती एवं भौतिक, 2006, 237–271) बिरहोर आदिवासी समाज में शहरीकरण का प्रभाव दोगुना बढ़ गया है। अब अधिक से अधिक श्रम प्राप्त करने और नौकरी करने के लिए अपने जगह को बदल देते हैं। उनके सामाजिक जीवन में यह बदलाव शिक्षा के कारण है, जबकि शिक्षा की दखलअंदाजी की वजह से इनमें बढ़ती व्यक्ति परक दृष्टिकोण की व्यक्तित्व के रूप में अच्छी तरह से बदलते रूझान को जोड़ रही है तथा उनके आर्थिक परिर्वतन में भी बदलाव ला रही है। व्यवसायिक व आर्थिक परिर्वतन में आदिवासी समाज शिक्षा के पहले लाभकारी काम लेने व घर चलाने हेतु अधिक कुशल बनने में ज्यादा उत्साहित दिखाई देते है ताकि अपना जीवन सके।[12]

(चौधरी 2006, 624–642) सामाजिक संपर्क के प्रसार के उद्देश्य से मटियाला गाँव में सन् 1962 में शिक्षा के लिए प्राथमिक स्कूल स्थापित किया गया था। अपने शोध में इन्होंने बताया कि बिरहोर के जीवन में शिक्षा दूसरे शब्दों में औपचारिक शिक्षा या स्कूली शिक्षा का एक नया आयाम है। किन्तु बेरसा और बरेरिया गाँव में प्राथमिक स्कूल के अभाव के कारण बिरहोर जनजाति के बच्चें स्कूल जाना पसंद नही करते हैं और जीवन आजीविका चलाने हेतु स्कूल जाने से बेहतर श्रम करने को महत्त्व देते है। किंतु बिरहोर जनजाति विभित्र कार्यक्रमों और साक्षरता कार्यक्रम के तहत, स्कूली शिक्षा में बच्चों की शिक्षा के लिए दर्ज संख्या में बढ़ोतरी और माता–पिता की उत्प्रेरणा बालको की शिक्षा के लिएु प्रोत्साहन में एक प्रभावशाली योगदान दे सकती है।[13]

समस्या–अन्वेषण

- इस शोध पत्र में बिरहोर जनजाति की रहन–सहन का सम्यक बोध कराना है।
- सामाजिक ढाँचें के परिवर्तनों और संशाधन की समीक्षा करने का प्रयास है।
- बाजार का विस्तार और परिणामस्वरूप सामाजिक गतिशिलता और नए सामाजिक वर्ग के निर्माण के कारकों की विवेचना करने का प्रयास है।
- वर्तमान समय में सरकार द्वारा तथा विभिन्न स्वायत संस्थाओं द्वारा तरह–तरह की परियोजनाएं लागू कि जा रही है। उनसे अवगत कराने का प्रयास।
- शैक्षणिक रूप से बहुत ही पिछड़े बिरहोर जनजातियों को आधुनिक जीवन का बोध कराने का प्रयास कराना। शिक्षा के अभाव में उन्हें सर्वागीण विकास हेतु सरकारी योजनाओं से अवगत कराना।
- इनके अस्तित्व की रक्षा के लिए किए गए अब तक के सभी प्रयास विफल और निष्फल सिद्ध हुए है इनकी आबादी तेजी से घट रही है। इनके लिए प्रदान की गई योजनाओं से अवगत कराने का प्रयास।
- जंगलों पर ही इनका जीवन निर्भर है और जंगल तेजी से काटे जा रहे है। इनको इन्हीं के वातावरण में रखकर सरकारी योजनाओं ओर नितियों को बताना है और उनसे इन्हे लाभान्वित कराना है।

  इनके बीच प्रचलित जादू–टोना डायन बिसाही धार्मिक अन्धविश्वास और रूढ़ीवादी परम्परा से छुटकारा दिलाने का प्रयास।

शोध का उद्देश्य

- बिरहोर जनजाति की दयनीय सामाजिक स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- बिरहोर जनजाति की निम्न स्तरीय आर्थिक स्थिति की ओर ध्यान आकर्षित करना।
- बिरहोर जनजाति के लिए सरकार द्वारा की गई पुर्नवास की व्यवस्था असफल हो रही है। इस ओर ध्यान आकर्षित करना।
- बिरहोर जनजाति में जागरूकता की कमी के कारण शिक्षा का अभाव है, इस ओर ध्यान आकर्षित करना।
- बिरहोर जनजाति में व्याप्त अन्धविश्वास, जादू–टोना, झाड़–फूक आदि रूढ़ीवादि कुरीतियों से बाहर निकालने का प्रयास करना।
- बिरहोर जनजाति में अहार का अभाव कुपोषण संघातक बीमारियों की ओर ध्यान आकर्षित करना।

शोध प्रश्न

- सामाजिक रूप से बिरहोर जनजाति पिछड़े क्यों हैं?
- बिरहोर जनजाति की आर्थिक स्थिति निचले स्तर की क्यों हैं?
- बिरहोर जनजाति के लिए सरकार द्वारा की गई पुनर्वास व्यवस्था असफल क्यों है?
- बिरहोर जनजाति के बीच शिक्षा अभाव का कारण क्या हैं?
- बिरहोर जनजाति मे अन्धविश्वास और जादू–टोना, झाड़–फूक आदि रूढ़िवादी कुरीतियाँ क्यों है?
- बिरहोर जनजातियों में अहार का अभाव कुपोषण व संघातक बीमारियाँ क्यों है?

शोध प्रविधि एवं कार्य प्रणाली

विषय से सम्बन्धित शोध झारखण्ड की विशेष पीछड़ी जनजाति "बिरहोर" पर प्रस्तावित है। इस शोध हेतु सुचनाओं को संकलित करने में प्राथमिक स्रोत के अन्तर्गत सीधा मुआयना करना, साक्षात्कार अनुसूची तथा प्रश्न समुह का इस्तेमाल कर आवश्यकतानुसार इन स्रोतो की सूचनाएँ या तथ्य एकत्रित करने की कोशिश की जाएगी। द्वितीय स्रोत के अन्तर्गत पुराने ग्रन्थ, शिलालेख, प्राचीन अवशेष, इनसाइक्लोपीडिया, संग्रहालय,(जनजातीय संग्रहालय मोराबादी राँची) लाइब्रेरी,(इन्टरनेश्नल लाईब्रेरी एण्ड कल्चरल सेन्टर,राँची–1) सरकारी दस्तावेज, अभिलेखागार आदि का प्रयोग करने का प्रयास किया जाएगा। ताकि विश्लेषण करना, सुवधिजनक हो सके, साथ ही सामाजिक सर्वेक्षण पद्धति, ऐतिहासिक पद्धति, विश्लेषणात्मक, विवेचनात्मक वर्णनात्मक पद्धति द्वारा विवरण प्रस्तुत करने का प्रयास किया जाएगा।

प्रस्तुत शोध–प्रबन्ध "बिरहोर जनजाति की सामाजिक अवस्था का एक विशलेषनात्मक अध्ययन–झारखंड राज्य के संदर्भ में" प्रमुख रूप से इनका उदगम, प्रवर्जन, निवास स्थान तथा अन्य महत्वपूर्ण लोक साहित्य, लोकगीत, लोक कहानी, आदि के अध्ययन से तथ्यात्मक एवं ऐतिहासिक विवेचन को सन्नहित करने का प्रयास है। बिरहोर जनजाति के जीवन संस्कृति भाषा एवं धर्म को एक विशिष्ट पहचान सुनिश्चित करते हुए स्थायित्व प्रदान करने का प्रयास है। इस शोध प्रबन्ध के माध्यम से बिरहोर जनजाति की भूमि व्यवस्था कानून–नियम एवं परम्पराओं की जानकारी उपलब्ध कराने का प्रयास है। महिलाओं के लिए परम्परागत नियम और कानून की विस्तृत रूप से जानकारी उपलब्ध कराने का प्रयास है। इस जनजाति पर आधुनिकता के प्रभाव के कारण उनमें व्याप्त विसंगतियाँ को दर्शाने का प्रयास एवं उनमें व्याप्त विसंगतियों को दर्शाने का प्रयास एवं क्रियान्वयन हेतु उठाए जाने वाली प्रमुख कदम को दर्शाना हैं।

अध्याय विभाजन

प्रथम अध्याय–भूमिका

द्वितीय अध्याय– बिरहोर जनजाति की उत्पत्ति सम्बन्धित अवधारणा।

तृतीय अध्याय –प्रकृतिवास एवं वितरण।

चतुर्थ अध्याय – बिरहोरों की आर्थिक स्थिति।

पंचम् अध्याय – बिरहोरों की सामाजिक स्वरूप।

षष्टम् अध्याय –बिरहोर जनजाति का धर्म एवं त्योहार।

सप्तम् अध्याय – बिरहोर जनजाति का राजनैतिक संगठन।

अष्टम् अध्याय– उपसंहार

ग्रन्थ सूची

डाटा संग्रहण में उपकरणों का प्रयोग एवं विश्लेषण

प्रस्तावित शोध प्रबन्ध का प्रमुख स्रोत अभिलेखागार तथा विभिन्न पुस्तकालयों में उपलब्ध तत्कालीन सामग्रियों के अतिरिक्त शोध पत्र पत्रिकाएँ अखबार आदि है। पुरातात्विक स्रोत में लिखित कई दस्तावेज कतिपय प्रकाशित ग्रन्थ द्वितीय स्रोत के रूप में सहायक सिद्ध होंगे। पुनः लोककथा, लोकगीत एवं लोक परम्परा आज भी शोध कार्य के लिए प्रभावशाली है तथा विवेच्याधीन विषय पर भी इसका काफी महत्व है।

प्रस्तावित कार्य का महत्व

झारखण्ड राज्य में वास कर रहे बिरहोर जनजातियों के समाज की रहन–सहन और उनकी मौजुदा सामाजिक आर्थिक स्थिति को जानने के लिए यह शोध कार्य अत्यंत आवश्यक है और महत्वपूर्ण प्रतीत होता है। झारखण्ड राज्य अन्तर्गत जीविका का निर्वहन कर रहे बिरहोर जनजाति में ऋणग्रस्तता और निर्धनता तथा बीमारी और भुखमरी–महामारी की समस्या को समझने और उसके निदानार्थ यह शोध कार्य बिल्कुल आवश्यक है। इस शोध में इन सभी पर नये ढंग से प्रकाश डालने के साथ–साथ बिरहोर वासियों का जंगल, जमीन के प्रति भावनात्मक तथा धार्मिक लगाव के बारें में उनकी संस्कृति को भी बताने का प्रयास किया जाएगा। उनकी इस भावनात्मक लगाव पर कैसे चोट पहुँचा और क्या प्रतिक्रिया हुई इसका भी अध्ययन किया जाएगा इससे इस शोध कार्य का महत्व और भी बढ़ जाता है।

झारखण्ड राज्य में वास कर रहे बिरहोर जनजाति के लिए वर्तमान सरकार (केन्द्र तथा राज्य) विशेषकर झारखण्ड सरकार झारखण्ड की कल्याणकारी कार्यक्रमों को बनाने और इस क्षेत्र में लागू करने में सुविधा होगी। ये जनजाति अपने आर्थिक हित को समझ सकेंगे और सरकारी कार्यक्रमों को निर्वाहित कर सकेंगे। जनजातियों में व्याप्त असंतोष तथा तनाव को समझकर उसका निदान करने में सहायक सिद्ध होगी। झारखण्ड के इन सरल समुदायों की आर्थिक सामाजिक तथा सांस्कृतिक पक्ष को समझने में सहुलियत होगी तथा सरकार को कल्याणकारी कार्यक्रमों को बनाने तथा इन क्षेत्रों में लागु करने में सुविधा होगी।

समकालीन ज्ञान में योगदान

बिरहोर जनजाति एक अनुसूचित जनजाति है जिसकी अपनी भाषा संस्कृति और धार्मिक जीवन है। उनका जीवन संस्कृति, धर्म भाषा एवं सभ्यता उच्च स्तरीय थी किन्तु शैक्षणिक दृष्टि से बिरहोर अत्यंत पिछड़े है। वे अपनी मातृभाषा एवं बच्चों की शिक्षा का महत्व नहीं देते और न ही प्रयास करते है। वे जीविकापार्जन के लिए कृषि पर आधारित है। किन्तु परम्परागत तरीके से कृषि कार्य सम्पन्न करने के कारण उन्हें दो बार भोजन भी मुनासिब नहीं होता है। वर्तमान में सरकार द्वारा अलग–अलग संस्थाओं के द्वारा कई योजनाओं को लागू की जा रही है। अतः बिरहोर जनजाति को इसका लाभ उठाना चाहिए। उन्हें आज कृषि को नवीन तकनीकों एवं विधियों को अपनाने की आवश्यकता है। पशुपालन एवं मतस्य पालन द्वारा भी अपने जीवन स्तर में बदलाव ला सकते है।

भविष्य के कार्य

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की एक सीमा होगी क्योंकि ज्ञान तथा शोध कार्य भी एक सीमा में आबद्ध है, इसलिए इस विषय पर अन्य शोधार्थों के लिए भविष्य में कुछ नया खोजने के विकल्प मौजूद है। इस शोध कार्य हेतु नवीनतम ऐतिहासिक लेख, जनरल आदि लिखा जाएगा और उनका प्रकाशन करवाया जाएगा। भविष्य की पहली योजना बिरहोर जनजाति पर आधुनिकता के प्रभाव को दर्शाने का प्रयास होगी।

संदर्भ–सूची

1. प्रमाणिक संजय, *झारखण्ड की बिरहोर जनजाति एवं उनकी विलुप्तता की समस्या,* नई दिल्ली, सत्यम पब्लिसिंग हाउस, 2019, पृ0सं0, 7
2. चक्रवर्त्ती रवि राहुल, *"बिरहोर जनजाति के शालात्याग के कारणों का मानव शास्त्रीय अध्ययन (छत्तीसगढ़ राज्य के विशेष संदर्भ में)",* काव इंटरनेशनल जर्नल ऑफ आर्ट्स, ह्युमेनिटिस एण्ड सोशल साइंसेस, कीझास /अप्रैल – जुन 2017/ वोल्युम–4/ आईएसएस–2 /ए45, पृ0सं0 249–254
3. मनना समिता, सरकार रोमी और घोष अरिता, *"एजुकेशन एण्ड पैर्टन ऑफ मैरेज सिस्टम : ए माइक्रो स्टडी ऑन द बिरहोर्स इन हजारीबाग डिस्ट्रीक्ट झारखण्ड",* इंटरनेशनल जर्नल ऑफ सोशल साइंस वोल्युम, 2 नं0 2, दिसंबर 2013, पृ0स0 –2
4. ठाकुर सुदर्शन और शर्मा ज्ञान प्रसाद, *"ए जर्नी वीथ द बिरहोर्स इन हजारीबाग"* न्युज रिच जुलाई – अगस्त 2012, पृ0सं0 – 17
5. डालटन, ई.टी., *"डिस्क्रिपटिव एथनोलाजी ऑफ बंगाल,* "कलकत्ता आफिस ऑफ द सुपरिन्टेन्डेन, ऑफ गवरमेन्ट प्रिन्टीग, 1872, पृ0सं0, 158
6. प्रेमी जितेन्द्र कुमार, कुमार अरून, *"डेवलेपमेंट एण्ड सोशल इन क्वालिटी अमंग द बिरहोर : ए पीटकुलरली मोलनेरेबल ट्राइबल ग्रुप्स ऑफ छत्तीसगढ़ इंडिया"* इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च इन एथ्रोपोलोजी वोल्युम नं0 2/जुलाई–दिसंबर 2018 – 1
7. राय, एस. सी., *"द बिरहोर,"* रांची जेवियर पब्लिकेशन, 1925 पृ0स0 131
8. मजुमदार, डी. एन., *"रेसेज एण्ड कल्चरस ऑफ इण्डिया,"*बम्बई, एशिया पब्लिशिंग हाउस, 1958 पृ0सं0, 365
9. बर्मन, बी. के. राय, *"ट्राइबल डेमोग्राफी, इन ट्राइबल सिचुएशन,"* शिमला, इण्डियन इन्स्टीट्यूट आफ एडवांस्ड स्टडी, 1972, पृ0सं0 5
10. शर्मा, विमला चरण, *"झारखण्ड की जनजातीयाँ,"* रांची क्राउन पब्लिकेशन्स, 2006 पृ0सं0 96
11. प्रमाणिक संजय, *"झारखण्ड के बिरहोर"* नई दिल्ली, एजुकेशनल बुक सर्विस, 2018 पृ0सं0, 44
12. मैती जी. सी. एण्ड भौमिक पी. के. *ओक्यूपेशनल मोबीलीटी एण्ड सोसियो इकोनोमिक चेन्ज अमंग द बिरहोर, ए माइक्रोलेवल स्टडी इन पुरलिया डिसट्रिक्ट,* नई दिल्ली, पी. डी. सोरीयल पब्लिकेशन, 2006 पृ0सं0 – 237–271
13. चौधरी, एम. के *"द बिरहोर इन ट्रानजीसन इन एन्थ्रोपोलोजी ऑफ प्रीमिटीब ट्राइब्स इन इन्डिया इडि शर्मा,* नई दिल्ली सिस्यिल पब्लिकेशन, 2006 पृ0सं0 – 624 – 642